अब सरहद घर तक आ गयी है

मयूर पूरी

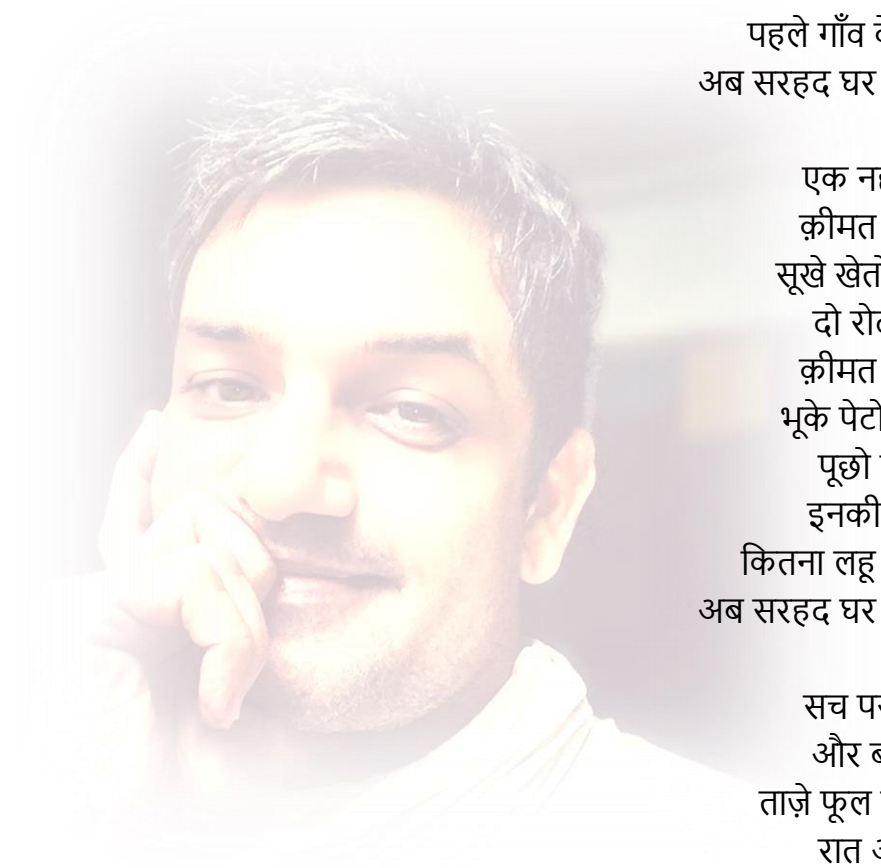

चौखट पे चौक्कन्ने रहना
अब ये नौबत आ गयी है
पहले गाँव के बाहर थी
अब सरहद घर तक आ गयी है

एक नहर की
क़ीमत क्या है
सूखे खेतों से पूछो
दो रोटी की
क़ीमत क्या है
भूके पेटों से पूछो
पूछो इनसे
इनकी आँखें
कितना लहू बहा गयी हैं
अब सरहद घर तक आ गयी है

सच पर डंडे,
और बरसते
ताज़े फूल गुनाहों पर
रात अंधेरी
कालिख मल कर
चलती है अब राहों पर
सबको डँस कर
नागिन कोई
जैसे पलटा खा गयी है
अब सरहद घर तक आ गयी है

चौखट पे चौक्कन्ने रहना
अब ये नौबत आ गयी है
पहले गाँव के बाहर थी
अब सरहद घर तक आ गयी है
*** ***

४ फ़रवरी २०२१